श्रद्धा–सुमन
स्मृति शेष डॉ.डी.पी.पूनिया
प्रथम निदेशक, आचार्य तुलसी क्षेत्रीय कैन्सर चिकित्सा एवं अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

डॉ. डी.पी.पूनिया का जन्म त्रिपाली छोटी, तहसील राजगढ जिला चूरू में दिनांक 17 जनवरी 1950 को हुआ। आपने अपनी समस्त विद्यालयी एवं महाविद्यालयी शिक्षा पूर्ण की एवं इसी सरदार पटेल आयुर्विज्ञान महाविद्यालय से 1973 में एम.बी.बी.एस की उपाधि प्राप्त की। 1977 में आपने एस.एम.एस मेडिकल कॉलेज, जयपुर से एम.डी. की उपाधि प्राप्त की एवं कैंसर के रोगियों की चिकित्सा सेवा में प्रवृत्त हुए।

जून 1977 से जनवरी 1982 तक आपने एस.एम.एस मेडिकल कॉलेज, जयपुर में सहायक आचार्य के रूप में कार्यग्रहण किया तत्पश्चात जनवरी 1982 से अगस्त 1989 तक आप जे.एल.एन. मेडिकल कॉलेज, अजमेर में सह–आचार्य के पद पर पदान्वित हुए एवं इस अवधि के पश्चात आपने U.A.E में भी अपनी सेवाए प्रदान की। आपने 1994 में स्वदेश आकर पीबी.एम. चिकित्सालय में आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, रेडियोथैरेपी का पदभार ग्रहण किया। आपने इसी महाविघालय के अधीन पी.बीएम चिकित्सालय में अधीक्षक के पद पर सितम्बर 1996 से दिसम्बर 1999 तक अपनी सेवा पूर्ण निष्ठा के साथ प्रदान की आपकी इसी कार्यशैली के कारण आप दिसम्बर 1999 में इसी महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के पद पर आसीन हुए। सिद्वहस्त चिकित्सक के रूप में आपको अब भी उस क्षेत्र में निरंतर स्मरण किया जाता रहा है।

आपके भागीरथी एवं अथक प्रयासों के कारण एस.पी.मेडिकल कॉलेज, बीकानेर के अधीन रेडियोथैरेपी विभाग को देश का 13 वा क्षेत्रीय कैन्सर सेन्टर बनने का दर्जा प्राप्त हुआ तथा इस रीजनल कैन्सर सेन्टर के प्रथम निदेशक के रूप में अपनी सेवाए इस संस्थान को प्रदान की। अल्प समय में ही आपके नेतृत्व में चिकित्सा में गुणवत्ता की जो कई गुनी वृद्धि हुई थी वह प्रशंसनीय है। आपके ही भागीरथ प्रयत्नों के फलस्वरूप आज इस केन्द्र में उच्च गुणवता की मशीने स्थापित हुई तथा कैन्सर रोगियों को इन मशीनों तथा सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है।

आप एक श्रेष्ठ चिकित्सक, शिक्षक व सफल मार्ग निर्देशक भी थें जहॉ छात्रों को आपमें एक आत्मीयता पूर्ण शिक्षक अभिभावक के दर्शन होते थे वही सहकर्मियों के लिये आप निरंतर उनकी समस्याओं को समझ कर सुलझाने वाले व उनका मार्ग निर्देशन करने वाले रहे । संस्थान के प्रशासनिक कार्यो में अत्यधिक व्यस्त रहने के बाबजूद भी आपने पी.जी अध्ययन की अनदेखी कभी नहीं होने दी जिसके परिणामस्वरूप आपके द्वारा पढाये गये छात्र अनेक उच्च शिक्षण एवं शोध संस्थानों में शीर्षस्थ पदों को प्राप्त करने मे सफल हुए है।

आप एक सफल प्रशासक रहे, विभाग के हित में नीतियां बनाकर उनको दृढतापूर्वक लागू करते समय उसके साथ समुचित धैर्य भी रखना आपकी कार्य शैली की वह विलक्षणता रही जो कि आपके सफल प्रशासक होने का रहस्य है तथा हमारें लिये मार्गदर्शन का माध्यम भी है।

दिनांक 02.10.2017 को डॉ. डी.पी. पूनिया साहब हमारें बीच नहीं रहे लेकिन सिद्वहस्त चिकित्सक, मार्गदर्शक के रूप में आपको अब भी उस क्षेत्र में निरंतर स्मरण किया जाता रहेगा।